समत्त्व की साधना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरूत्थान का अर्थ है पुनर्जागरण, उन्नत से अवनत की और जाना। इस कार्यक्रम में ऐसे विषयों को प्रस्तुत किया जाता है जिससे सामाजिक समरसता बनी रहे। समत्त्व की साधना एक ऐसा विषय है जहां सभी प्रकार के भेदभाव समाप्त हो जाते हैं। समत्त्व का अर्थ है समताभाव। जब हम स्वभाव में रहते हैं तो समत्त्व भाव दिखाई देता है। जब विभाव में रहते हैं तो विषमता दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में स्थित प्रज्ञ के विषय में कहा गया है कि जो व्यक्ति स्थित प्रज्ञ होता है उसकी प्रज्ञा जागृत हो जाती है। स्थित प्रज्ञ सभी परिस्थितियों में समान रहता है। समत्त्व की साधना सामंजस्य की साधना है। सहनशीलता की साधना है। यह प्रज्ञा का स्तर है। प्रज्ञा आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। गीता में समत्त्व को योग कहा गया है। योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है। चित्त की वृत्तियों के निरोध से चित्त निर्मल हो जाता है। मन में जितनी भी ग्रन्थियां है वे सभी समाप्त हो जाती है। कषाय को समत्त्व भाव से जीता जाता है। भगवान महावीर ने जीवन समत्त्व भाव की साधना की थी। इसीलिए उन्हें महावीर कहा जाता है। उन्होंने सभी प्राणियों के प्रति समता का भाव धारण किया। जीवन में अनेक कष्टों को समभाव से सहन किया। अनेक उपसर्गों को सहने के बाद भी वे विचलित नहीं हुए, उनका समताभाव ही पुष्ट हुआ। समाताभाव शत्रु को भी मित्र बना देता है। समता से ऊर्जा प्राप्त होती है। राग–द्वेष समाप्त हो जाता है। दोषों की सफाई समताभाव से हो जाती है। आत्मा की शुद्धता समताभाव से बढ़ती है। सामाजिक संदभों में समाताभाव का बहुत महत्व है। समताभाव से व्यक्ति मनुष्य से भगवान बन सकता है। मानव जीवन में समता का बहुत अधिक महत्व है।

समता एक ऐसा तत्व हैं जहां पर सभी प्रकार का भेदभाव मिट जाता है। यह जीवन का सर्वोच्च आदर्श है। भारतीय ऋषि मुनियों ने समत्व पूर्ण जीवन जीकर समाज के सामने एक उच्च आदर्श प्रस्तुत किया। ऋषि वह होता है जो समत्वपूर्ण जीवन स्वयं जीता है और दूसरों को भी वैसा जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसीलिए ऋषियों को ज्ञाता और द्रष्टा कहा जाता

है। समत्वपूर्ण जीवन का अर्थ है अच्छी सोच, अच्छा विचार, अच्छा चिंतन, रचनात्मक और विधेयात्मक विचार। हम दूसरों के प्रति कैसा सोचते हैं, यह बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है। विचार के साथ मानस से जो तरंगे निकलती हैं वह भी व्यक्ति को प्रभावित करती है। हमारे संसार में विचार विनिमय के साधन है मन, वाणी और शरीर। मन के द्वारा आदमी चिंतन करता है, वचन के द्वारा चिंतन को व्यवहार में लाता है और शरीर के द्वारा उसका क्रियान्वयन करता है। जब हम किसी अनजान व्यक्ति को अन्धे को, लूले को, लंगड़े को जिससे की हमारा कोई परिचय नहीं है, आदर के साथ उसको उसका मार्ग दिखलाते हैं, या उसके साथ सद्भावना पूर्वक बात करते हैं तो उसको भी अच्छा लगता है और आत्मीयता प्रतीत होती है। मन, वाणी और शरीर का संयम समता को व्यक्त करता है। समता एक रचनात्मक भावना है। समता में सहनशीलता का गुण होना चाहिए। समता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव निर्मल बना सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है, व्यक्ति अपनी आत्म–शक्ति को पहचाने। उसके अंदर एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात कर लिया जाए। ध्यान धारणा द्वारा अपने–आपको अंतर पुष्ट करने की एक प्रबल आवश्यकता है। भौतिक सुख–दुःख का मानव–जीवन में कोई स्थान नहीं। मानव की सम्पूर्ण चर्यां आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होनी चाहिए।

जिसने संयम, समता और सद्भावना के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है। संयम के कठोर मार्ग पर चलने वाले साधक के जीवन में परीषहों का आना स्वाभाविक है, क्योंकि साधक का जीवन चारित्र की मर्यादाओं से बधा है। मर्यादाओं के पालन से मानव जीवन की सुरक्षा होती है। मर्यादाओं का पालन करते समय संयममार्ग से च्युत करने वाले कष्ट एवं संकट ही मानव की कसौटी हैं। इसलिये उन कष्टों को समभाव और सद्भावना से सहन कर वह अपने आचार का पालन करे। साधक के लिये परीषह बाधक नहीं साधक होते हैं। मानव में जीवन यापन के दो प्रमुख आयाम होने

चाहिए– अहिंसा और कष्ट सहिष्णुता। कष्ट सहने का अर्थ शरीर, इन्द्रिय और मन को पीड़ित करना नहीं, किन्तु अहिंसा आदि धर्मों की आराधना को सुस्थिर बनाये रखना है। मानव जीवन में अनेक बाधायें, प्रतिकूलतायें तथा उपसर्गादि आते ही रहते हैं, इन्हें समतापूर्वक सहना ही परीषह जय कहलाता है। बड़े लोगों का यह धर्म है कि यदि छोटे लोग किसी प्रकार का उत्पात भी करे तो उन्हें क्षमा कर दें। समता और सद्भावना के बिना यह संभव नहीं है। अतः समता मानव का सर्वोत्तम गुण है। समता की साधना से आत्मा में राग–द्वेष समाप्त हो जाता है। भेदभाव और मनोमालिन्य भी समाप्त हो जाता है।